भक्ति की दूसरी आवश्यकता है निष्कामता। भक्ति का मतलब है भगवान से प्यार करना। प्यार में कभी भी किसी भी तरह की शर्त या मांग नहीं रखना है। भगवान से कुछ भी मांगना नही है बल्कि उनको तन, मन , धन , प्राण देने की सोचना है। भगवान को आपसे कुछ भी नही चाहिए, लेकिन आपको शुद्ध प्रेम का अभ्यास करने की आवश्यकता है क्योंकि आप दिव्य प्रेम अमृत का स्वाद लेना चाहते हैं। आप कभी भी भगवान से मायिक या आध्यात्मिक किसी भी तरीके की मांग नहीं करेंगे। भगवान की इच्छानुरूप हमे रहना है। वे चाहे जैसा व्यवहार करे, हमें उनके सुख की ही सोचना है। श्रीकृष्ण आपके साथ या आप से दूर हो सकते हैं, वह आपसे प्यार कर सकते है या वह आपसे नफरत कर सकते है या वह दूसरों से प्यार कर सकते है, वह आप के बारे में अच्छा बोल सकते है या वह आप के बारे में बुरा बोल सकते है, वह आपको स्वीकार कर सकते है या वह आपको अस्वीकार कर सकते है, वह आपको एक समझदार व्यक्ति समझकर व्यवहार कर सकते है या वह आपको एक पागल व्यक्ति समझकर व्यवहार कर सकते है। वह आप से उदासीन रहे या आपको सुदर्शन चक्र चलाकर मारे, आपकी हमेशा यह कामना रहेगी कि मेरे प्यारे श्रीकृष्ण खुश रहना चाहिए, मेरे साथ जो भी होता हो।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

लेकिन याद रहे, किसी भी संसारी व्यक्ति के साथ इस तरह के प्यार का अभ्यास न करें। ये दिव्य प्रेम के गुण हैं और इसलिए प्रियतम पहले निर्दिष्ट मानदंड के अनुसार दिव्य व्यक्तित्व-भगवान या वास्तविक संत होना चाहिए। संसार में तो सबकुछ स्वार्थ के आधार पर ही होता है। रास्ते के रोगी भिखारी से कोई प्यार नही करता। क्योंकि

उससे कोई स्वार्थ नही सिद्ध होना है। जब तक अनंत आनंद का स्वार्थ ना सिद्ध हो, तब तक कोई भी व्यक्ति दूसरे के लिए कुछ कर ही नही सकता। ये जानकर संसार में चालाक बने रहिये। संसार में ना किसी से प्यार हो, ना किसी से द्वेष हो।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

ईश्वरीय क्षेत्र का प्यार यदि निष्काम है तो वो हर क्षण बढ़ता जायेगा। उसमें कभी ब्रेक नही लगेगा। यदि निष्काम प्रेम माधुर्य भाव युक्त है तो वो सर्वोच्च कक्षा का महारास रस मिलेगा जिसके पाने के लिए बडे बडे ज्ञानी परमहंस, ब्रम्हादिक आदि ही नही, महालक्ष्मी भी तरसती है। सकाम प्रेम स्वार्थ के आधार पर उपर नीचे होते रहता है। सकाम प्रेमी विशेष स्वार्थहानी होने पर नास्तिक बनकर भगवान को गाली भी दे सकता है। इसलिए साधक को निष्काम रहना परमावश्यक है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132